Chapter-3

तृतीय अध्याय

करुणासागर- जीवनी और व्यक्तित्व

तृतीय अध्याय

करुणासागर - जीवनी और व्यक्तित्व

सं. 1829-1934 वि.

पूर्व पृष्ठों पर हमने विभिन्न संप्रदायों और उनके प्रवर्तकों के संबंध में विचार किया है. आलोच्य कवि करुणासागर और उनके द्वारा स्थापित ` कायम पंथ ` पर भी विचार किया गया है. इस अध्याय में हम उनकी जीवनी और व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त सामग्री के आधार पर देने का प्रयत्न करेंगे.

भारत देश अपनी सांस्कृतिक परंपराओं के लिए विख्यात रहा है. प्रायः सभी प्रदेशों ने समय समय पर भाषा-भेष की विभिन्नता के बावजूद भी देश के सांस्कृतिक अनुष्ठान में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है. गुजरात भी इस दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण प्रदेश रहा है. यहाँ पर भी समय-समय पर ऐसी अनेक विभूतियाँ अवतरित होती रही हैं जिनके प्रभाव की सीमाएं अनेक शताब्दियों तक विस्तृत एवं अविच्छिन्न रही हैं. श्री करुणासागर महाराज, श्रीजी महाराज [कर्मभूमि गुजरात] श्रीमद् वृसिंहाचार्य महाराज, श्री सागर महाराज, श्री रंग अवधूत, श्री पुनित महाराज आदि ऐसे ही संत हुए हैं जिन्होंने अपनी भक्ति, साहित्य एवं उपदेशों से इस प्रदेश की जनता में नये प्राण फूँके और नयी ऊर्जा उत्पन्न की.

गुजरात की हिन्दी भक्ति-काव्य- परंपरा अत्यंत ही समृद्ध रही है. हिन्दी काव्य में जिस प्रकार भक्ति की सगुण और निर्गुण दोनों ही धाराएं अप्रतिहत रूप से प्रवहमान रहीं, ठीक वैसे ही दो धाराओं में गुजरात के भक्त कवियों को विभाजित किया गया है. वैष्णव कवियों पर जहाँ वल्लभाचार्य और उनके पुत्र विट्ठलदास का प्रभाव है, वहीं यहाँ की संत-काव्य परंपरा पर कबीर का बहुत गहरा प्रभाव घोषित किया गया है. किंवदन्ती तो यहाँ तक है कि कबीर अपने पुत्र के साथ गुजरात प्रवास के लिए आये थे, और उन्होंने यहाँ के प्रसिद्ध स्थलों की यात्राएं की थीं. भुगुकच्छ से सात मील दूर ` कबीर वट `

---

1. गुजरात के हिन्दी गौरव ग्रंथ- डॉ. अंबाशंकर नागर, पृ. 7.

की कथा का संबंध उनके इसी प्रवास से जोड़ा जाता है. डॉ. अंबाशंकर नागर का कथन है कि " कबीर का गुजरात में आगमन संदिग्ध हो सकता है, पर मध्यकालीन गुजराती संत कवियों पर कबीर का जो प्रभाव पड़ा है, उसे नकारा नहीं जा सकता. [1]

गुजरात के सुप्रसिद्ध संत अखा एवं करुणासागर पर कबीर का बहुत गहरा और व्यापक प्रभाव देखा जाता है. उनके अतिरिक्त दादू, प्राणनाथ, भाणदास रवि, खीम, मोरार, भीकम, होथी, जीवणदास, लालदास, प्रीतम, धीरो, निरांत, भोजो, मनोहर, छोटम, जीता मुनिनारायण, संतराम, कल्याणदास, वस्तो विश्वंभर, दीनदरवेश, अर्जुन, अनवर, सागर, रंग अवधूत आदि संतों के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं .

गुजरात की निर्गुण एवं सगुण संत परंपरा के आधार पर गुजरात के इन मध्यकालीन संतों को विद्वानों द्वारा दो श्रेणियों में विभक्त किया जाता रहा है - 1 अवधूत. 2 आचार्य. अवधूतों की परंपरा में न गुरु है, न शिष्य पर आचार्यों की परंपरा इसके ठीक विपरीत है. इसमें शिष्य-शिष्याओं की एक सुदीर्घ परंपरा प्राप्त होती है, जो एक मिशनरी भावना के अंतर्गत अपने संप्रदाय और आचार्य के उपदेशों का प्रचार-प्रसार करने में विश्वास करती है. [2]

एक दृष्टि से देखा जाय तो करुणासागर की वाणी में निजानंद की मस्ती और आत्मसाक्षात्कार के दर्शन होते हैं इसलिए उनको अवधूत भी कहा जा सकता है. दूसरी दृष्टि से देखा जाय तो वे आचार्य ही है क्योंकि उन्होंने ` ज्ञान संप्रदाय ` - ` कायम पंथ ` की स्थापना की है और अपने शिष्यों के सहारे ` सत कैवल ` का उपदेश गुजरात की भक्त जनता को दिया है.

भारतीय जनमानस के विश्वास एवं मान्यताओं के आधार पर समय-समय पर महान विभूतियाँ अवतरित होकर धर्म-संस्कृति के सच्चे स्वरूप का ज्ञान

---

1. गुजरात के हिंदी गौरव ग्रंथ, डॉ. अंबाशंकर नागर, पृ. 7
2. आधुनिक गुजरातना संतो-डॉ. केशवलाल ठक्कर, प्रस्तावना, पृ. 8.

जनता को कराती रही हैं. गुजरात में सन् 1773 में करुणासागर, सन् 1824 में दयानंद सरस्वती, सन् 1853 में श्रीमत् नृसिंहाचार्य, सन् 1858 में नथुराम शर्मा, सन् 1883 में सागर महाराज, और सन् 1899 में रंग अवधूत का जन्म होता है. सन् 1834 में रामकृष्ण परमहंस और सन् 1872 में महर्षि अरविंद का जन्म होता है. इसके साथ मुसलमानों से आक्रांत और अंग्रेजों से उत्पीड़ित निस्तेज भारत में आध्यात्मिकता की लहर लहराने लगी.

करुणासागर का प्राकट्य गुजरात के खेड़ा जिले के कासोर और अजरपुरा गाँवों के मध्य में स्थित खोबली (फिलहाल विजयपुर) गाँव की वनखंडी में ' सेर ' नामक तालाब के किनारे संवत 1829 में, मंगलवार महाशुक्ल द्वितीया के दिन हुआ था.[1] ' सेर ' तालाब के स्थान पर आज भी उनके प्राकट्य की गवाही देता हुआ ' बाल कुवेर ' का मंदिर स्थित है जिसकी प्रत्यक्ष मुलाकात हमने ली है. यह मंदिर षष्ठम् कुवेराचार्य श्री शीतलदासजीने संवत 1993 में बनवाया था. यहाँ हर साल महाशुक्ल द्वितीया के दिन परमगुरु का ' प्राकट्य दिन ' मनाया जाता है, और भव्य मेला लगता है.

बाल कुवेर का मंदिर, विजयपुर जि. खेड़ा

1. अ. विश्वक्रम विद्वत्स निधि ग्रंथ- महंत शीतलदासजी आवृत्ति-2, पृ.8.
ब. परमगुरु करुणासागर के ' कायम-पंथ ' के सप्तम् कुवेराचार्य श्री अविचलदास जी महाराज से साक्षात्कार के आधार पर.

संसार में अपने आगमन का कारण बताते हुए करुणासागर कहते हैं कि --

कुवेर कबहु न आवही, कैवल छोड़ संसार
जीवतारण के कारणे लिये मनुष्य अवतार .[1]

करुणासागर का प्राकट्य अलौकिक रीतिसे हुआ था. वे अपने प्राकट्य के संबंध में ' विज्ञान सकृत मणिदीप ' नामक अपने ग्रंथ में कहते हैं कि मेरा शरीर हाड़ माँस और रक्त से नहीं बना है, क्योंकि मेरा जन्म गर्भ से नहीं हुआ है. मेरा शरीर बिंदु से नहीं बना है -

हावे कहुं उतपन सुनो मम तन अंदेशा,
हंमहे पुरुष अनाद्य उपाधि ते वरजीत वेशा. 19-1
कोटी कल्प परजंत अंत नहि व्यापत माया,
हाड मांस नहि रुद्र उद्र हंमही नहि आया. 2
उपन्यो आपोआप व्याप मोह सकल सहीरा,
अविगत अंग हमार बिंदुके नहि शरीरा. 19-3
बिंदु के नहि शरीर धीर ध्रुव पुरुष पुरांना,
रूप अरूपी खेल कुवेर अकेल निदाना, 19-4

वे कहते हैं कि हरदेव और सुमता, पालकी द्वीप के सल्लारट के गुजारन वन में आत्मकल्याणार्थ तपस्या कर रहे थे. उस समय मैं निजपति कैवल कर्ता के आदेश से वहाँ गया था और उनकी तपस्या से खुश होकर मैंने वचन दिया था कि आपका अगला जन्म क्षत्रिय कुल में होगा, और मैं आपको जंबुद्वीप [भारत] में मिलूँगा -

द्वीप पालकी मांही तांही तुम हुते जदनके,
सल्लारट शहेर सुवास तास तन ब्रह्म सदनके . 22-3
करीत जोग तजी भोग शोक नहि धरीतही मनमें,
तज्ञ थइ तदरूप कुवेर दोउ गये जु वनमें. 22-4

---

1. हंसतालेवा ग्रंथ- सं. अमृतलाल दवे द्वितीय आवृत्ति 1966, पृ.3.

बर नामे हरदेव सोमंता मात सहयांनी,
गुंजारन वनमांही तांही बैठे तप ठांनी. 23-1
हम हुते तेही बेर सेर आवत निज घरसे,
पठयेहु निजपति जवन गवन अरस अधरसे. 23-2

चीत चंचल तेही वखत हुता हमकु जीत जावन,
समटी सकल समाज दीप जंबु इत आवन. 26-2
तुमही पण तेही दीप जावो हममे आगु जन,
एही तन तजी अवतार लेहु घर क्षत्रिनके तन. 26-3

अपने प्राकट्य संबंध में करुणासागर ' अगाध बोध ' एवं ' विज्ञान सकृतमणिदीप ' नामक अपने ग्रंथों में कहते हैं कि एक दिन हेतबाई नामक एक नारी अपने बाल-पुत्र को लेकर ससुराल सारसा से अपने मैके शोलापुर [जि. खेडा] जा रही थी. जंगल का रास्ता था. रास्ते में उसे प्यास लगी. उसने अपने पुत्र को किनारे पर रखा और ' सेर ' नामक तालाब पर पानी पीने गई. इतने में नहार नामक हिंसक प्राणी आकर बच्चे को उठा गया. पानी पीकर माता जब आयी तो उसने अपने बच्चे को गायब पाया. उसके पैरों तले से जमीन खिसक गयी. रोते रोते उसकी छाती फट गयी . उस समय मुझे लगा कि मुझे प्रकट होकर पालकी द्वीप में दिया हुआ वचन निभाना चाहिए, और मैं प्रकट हुआ. मैंने हेतबाई से कहा कि यह बात किसी से मत करना, और मैंने उसके बच्चे जैसा रूप धारण किया. वह मुझे अपने घर ले गई, और क्षत्रिय कुल के रघुवीर और हेतबाई ने मिलकर मेरा लालन-पालन किया --

अब सुनीयो एक विनत हमारी, जंबुदीप देही जेही विधीधारी,
बाल रूप बंनमें हंम धरिया, तांहां सुत लेइ आइ एक तरीया ।। 71-1
तेही जंगल एक निर तलाइ, छोड़ी सुत पीवन गइ माइ,
पुठ भइ माताकी जबही, लेइ गये बालक नाहर तबही ।। 71- 2

निरपीड़ माता जब आइ, देख्या नहि सुत मंन पस्ताइ,
रोवत कुटत सोधन लागे, तरुवर नीच हुते हंम आगे. 71 -3
तीनके सुत सावज खाइ गइया, ढुंढत हंम बहोरु तांहां पइया,
जब माता घरकु लेइ गयेउ, उनके सुत जेसे हंम भयेउ . 71 - 4
हेतबाई रघुवरजीन नांमा, क्षत्री कुल हंम कीया विरांमा,
पुरवसे हंम कोल बंधाये, तब बालक होय उन घर आये. 71 -5
माताकु बनमें समजाइ, काहुसे भेद दीयो नहि ताइ,
गुप्त रहे येतने दीन जब ही, प्रकट पोकार कहत हंम अब ही. 71-6
सुनो हरिजन सहु संत सहयांना, या विधिसे हंम प्रगट भयांना,
अभयोन हंमही नहि आये, ताते तुमकु कही समजाये. 71-7

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

प्रथम अचानक सोय मोय बालक तन भयेउ,
वनखंडी के मध्य सदमाताकु पयेउ. 20-1
सुत अपनेकु लेइ पियेर जाती एक माइ,
लागी प्यास अपार तांहां एक आइ तलाइ. 20-2
सुत छोड्यो जल दूर पीवन नीर चाली मइया,
जब उनकी भइ पूठ्य बालक नाहेर लइ गइया. -3
लेइ गये नाहेर बाल बालमाता शिर तोरे,
रोवत चली नीहोर कुबेर दरश्या तेही ठोरे. -4
देखत कीया विलोच कहे आ बालक किनका,
सेहेजे मील्यो संजोग योग मही बीजके दिनका. 21-1
कहे मेरे सुत साट माटे दीनो किरतारा,
येसो धरी मनमोद बोध उर करे विचारा. -2
हंम बोले क्यौं बेर लगावत धर्मकी माता,
लेइ जा तोइ मोइ घेर जगतमें करुं विक्षाता. -3

करुं विख्याता जगत विगत विध विधि के ज्ञाता,
कहे कुवेर जुगमांही कछु नहि रखु अयांना. 21-4

इस प्रकार उन्होंने अपने मुख से ही अपने प्राकट्य संबंधित बातें कही हैं.

अब हम उनके जन्म-प्राकट्य-प्रादुर्भाव संबंधित ज्ञान-संप्रदाय से सम्बद्ध महानुभावों का मंतव्य देखे.

ज्ञान संप्रदाय गुरु गादी के सप्तम् कुवेराचार्य श्री अविचलदासजी से हमने करुणासागर के जन्म संबंध में प्रश्न पूछे.

प्रश्न- श्री करुणासागर के जन्म संबंध में आपका अभिमत क्या है ?

उत्तर- " सामान्य रीते दुनिया करतां कंई जुदा ज प्रकारना अथवा प्रकृतिथी पर एवा ए पुरुष हता. जो तेमनो जन्म योनि द्वारा थयो होय तो तेमना परिवार जनो, एमनी वंश परंपरा आपणने उपलब्ध थई शके, केमके बसो वर्ष एटले वधारे समय ना कहेवाय. तेओ एकसो पाँच वर्ष रह्या एटले एमने गये तो मात्र सो वर्ष थया. आ तो बहु नजीकनो इतिहास छे. एटले ए दृष्टिए आपणे शंका ना करी शकीए के एकनो जन्म अयोनिज जन्म नथी. " [1]

प्रश्न- उनका जन्म अयोनिज है, ऐसा सभी स्वीकार तो करते हैं, पर उसे वैज्ञानिक रीतिसे कैसे माना जा सकता है ?

उत्तर- " ए तो एक चमत्कारनी रीते ज मूकी शकाय. दरेक महापुरुषनी पोतानी शक्तिओ होय छे, अने ए शक्ति प्रमाणे आ एक सर्जन कर्युं छे. एटले चमत्कारनी रीते ज आपणे मूकी शकीए, विज्ञान-सायन्सनी रीते नहीं. घणी बधी वातो विज्ञानमां बंधबेसती नथी होती अथवा बधी ज वातो विज्ञान प्रमाणे ज होय एवुं पण नथी. घणां एवा चमत्कारो आपणे त्यां सर्जाय छे, जे आपणे त्यां विज्ञाननी

---

1. सप्तम् कुवेराचार्य श्री अविचलदासजी से साक्षात्कार के समय की प्रश्नोत्तरी के आधार पर.

रीते संशोधन पाम्या नथी. " [1]

इस प्रकार श्री अविचलदास जी का मानना है कि करुणासागर का प्रादुर्भाव अलौकिक होने से उसे चमत्कार ही कहना चाहिए और उसे विज्ञान के सहारे सिद्ध करनेका प्रयत्न नहीं करना चाहिए.

ज्ञान संप्रदाय सारसा के भूतपूर्व कोठारी श्री अमृतलाल दवे ने भी करुणासागर के प्राकट्य को अलौकिक बताते हुए साक्षात्कार के समय कहा कि- " तेमनो जन्म अयोनिज हतो, तेओ प्रगट थया हता. "

` बाल कुवेर ` मंदिर के वर्तमान महंत श्री डाह्याभाई सोमाभाई प्रजापति ने उनकी जन्म की घटना को अलौकिक ही बताया और वे हमें उनका जन्मस्थान दिखाने के लिए ` सेर ` तालाब भी ले गये.

` विश्वभ्रम विध्वंस निधि ` ग्रंथ की प्रस्तावना में करुणासागर के जन्म के संदर्भ में श्री अमृतलाल मोदी ने अपना सुचिंतित मंतव्य प्रकट करते हुए उनके अलौकिक और चमत्कारिक प्राकट्य की घटना का ही समर्थन किया है, और उन्हें

---

1. श्री अविचलदासजी से साक्षात्कार के आधार पर.

सत कैवल का ` परम विशेष अंश ` माना है.[1] उनके अनुसार विश्वभ्रम का विध्वंस करने तथा मुमुक्षुओं को सच्ची राह दिखाने के लिए निज सकर्ता कैवल ने अपने परम विशेष अंश के रूप में करुणासागर को आदेश देकर अपना प्रेमप्रेरित संदेश देने के लिए भेजा है. इस तरह करुणासागर का प्रादुर्भाव ईश्वर-परब्रह्म के आदेशानुसार अलौकिक परिस्थितियों में हुआ था.

---

1. समस्त ब्रह्मांड रूपी संसारना अंशोने उत्पन्न करनारा निज सकर्ता सत् कैवल छे. तेओ अमाकार शून्यमां निराकार दशामां सूनमून स्थितिमां सदाकाल रहे छे. विश्वनी उत्पत्ति स्थिति अने लयना मूल कारणरूप तेओ छे. ज्यारे जगतमां कशुं ज न हतुं त्यारे आदि पुरुष तरीके आदि मध्य अने अंतथी रहित तेओ पोते एकज अद्वैतरूप हता अने सहज अंतरवृत्तिनी उपजण थतां शुद्ध संकल्प द्वारा चराचर वस्तुओथी भरेल आ अखिल जगत तेमणे उत्पन्न कर्युं. ए वखते एमना परम विशेष अंश परम कृपालु भगवान करुणासागरनी हाजरीमां बधुं उत्पन्न थयुं हतुं. निज सकर्ता कैवले पोताने स्वयं उपजण थतां प्रथम संकल्प द्वारा परम विशेष अंश, द्वितीय संकल्प द्वारा विशेष अंश अने तृतीय संकल्प द्वारा सामान्य अंशो तेमज स्थावर, जंगम चराचर जगत वगेरे उत्पन्न कर्यां.

एटले निज कर्तानां परम विशेष अंश रूपे श्री करुणासागरनुं प्रागट्य खेड़ा जिल्लानां आणंद तालुकानां सारसा गामथी दस माइल दूर कासर गामनी सीममां आवेल तलावना किनारे सं. 1829, महा सुद द्वितीया अने मंगलवारना रोज थयुं हतुं -विश्वभ्रम विध्वंस निधि ग्रंथ . पृ. 7, 8 . - महंत शांतिदासजी , आवृति 2 सन् 1956.

गुजरात में हिंदी के विकास से संबद्ध कई शोधग्रंथ विद्वानों के द्वारा लिखे गये हैं. इन ग्रंथों के लेखकोंने करुणासागर के जन्म के संबंध में जो कुछ भी विचार प्रस्तुत किये हैं उन्हें भी दृष्टिगत कर लें. गुजरात के हिंदी संत कवियों और तत्संबंधी अनुसंधान के ख्यातनाम विद्वान डॉ. अंबाशंकर नागर ने कहा है कि " इनका जन्म संवत 1829 की महासुद द्वितीया को हुआ था. ये 105 वर्ष की उम्र में संवत 1934 में दिवंगत हुए थे. इनके जन्म के बारे में चमत्कार-पूर्ण बातें बताई जाती हैं. ऐसे प्रसिद्ध है कि इनका जन्म खेड़ा जिले के सरसा गाँव से सात मील की दूरी पर ` सेर ` नामक तालाब के पास के जंगल में हुआ था. सिसोदिया क्षत्रिय वंश के किसी व्यक्ति ने इन्हें अपने घर ले जाकर इनका लालन पालन किया था. " [1]

डॉ. रामकुमार गुप्त करुणासागर के जन्म संबंधित अपना मत व्यक्त करते हुए कहते हैं कि, " इनका जन्म कासौर और अजरपुरा के बीच (जिला खेडा) ` सेर ` नामक तालाब के पास हुआ था. कबीर की तरह इनके विषय में भी यह किंवदंती प्रसिद्ध है कि इन्होंने जंगल में अचानक बाल स्वरूप धारण किया. ` सेर ` स्थान पर अब भी इसकी साक्षी में एक छोटा सा मंदिर विद्यमान है. ऐसी मान्यता है कि सिसोदिया-क्षत्रिय वंश के किसी घर में इनका लालन-पालन हुआ. " [2]

डॉ. केशवलाल ठक्कर ने अंतर्साक्ष्य को ही प्रमाण माना है. [3]

आलोचकों ने भी किसी भी संभावित निष्कर्ष पर पहुँचने के बजाय अंतर्साक्ष्य की चमत्कारिकता और अलौकिकता को ही उनके जन्म का आधार

---

1. गुजरात के संतों की हिंदी वाणी, पृ. 282.
2. हिंदी साहित्य को गुजरात के संत कवियों की देन, पृ. 180.
3. " हुं माताना उदरमांथी जन्म लइने आव्यो नथी. हुं आदि अनादिनो महापुरुष होई पंच भौतिक उपाधिथी रहित छुं. मारा शरीरना रूप अरूप खेलने हुं एकलोज जाणुं छुं. - आधुनिक गुजरातना संतो - पृ. 31.

माना है.

ऊपर हमने अंतर्साक्ष्य और बहिर्साक्ष्य के आधार पर विभिन्न ग्रंथों, विद्वानों और कायमपंथ के आचार्य एवं महंतों के मंतव्यों को प्रस्तुत किया है और यह देखा है कि इन सभी ने करुणासागर के जन्म के संबंध में अलौकिकता एवं चमत्कारिकता को ही स्वीकृत किया है. आज के इस वैज्ञानिक और बुद्धिवादी युग में इस अलौकिकता पर अवश्य ही संदेह किया जा सकता है, किन्तु यदि हम अपने प्राचीन भारतीय साहित्य पर दृष्टिपात करें तो हमें ज्ञात होगा कि इस प्रकार की अलौकिकता से हमारा प्राचीन भारतीय साहित्य भरा पड़ा है. इस संबंध में अब जो कुछ भी कहा जायेगा वह मात्र तर्काधारित कल्पना ही होगी.

संभावनाएं कई हो सकती हैं. कबीर के जन्म के संबंध में जो कुछ कहा-लिखा गया है, वैसा आलोच्य कवि के संबंध में भी कहा जा सकता है, या दिव्यता से विभूषित करुणासागर ने अपनी अलौकिकता और स्वयं को पर ब्रह्मत्व से मंडित बताने के लिए ' नाहर ' के माध्यम से माया का आवरण दूर करके अपने असली असामान्य स्वरूप का परिचय दिया हो. अस्तु, यहाँ पर हम उनकी उसी दिव्यता का संबंध उनके प्राकट्य से जोड़ सकते हैं.

जैसा कि हम देख चुके हैं कि करुणासागर ईश्वर के परम विशेष अंश के रूप में अवतरित हुए थे इसलिए उनको शिक्षा की कोई आवश्यकता ही नहीं थी. सात वर्ष की आयु में ही गृहत्याग करके उन्होंने विज्ञान सूक्तमणिदीप नामक ग्रंथ की रचना की थी. करुणासागर ने जगत की गुरु परंपरा को ध्यान में रखते हुए अज्ञानी जगत को शंका का कोई कारण न रहे इसलिए गुरु करनेका निश्चय किया और ओड [जि. खेडा] नामक गाँव में समर्थ, त्यागी, योगी एवं महर्षि कृष्णस्वामी के पास वे गुरुदीक्षा हेतु गये. कृष्णस्वामी ने करुणासागर को दीक्षा दी. करुणासागर अपने ' विज्ञान सूक्त मणिदीप ' नामक ग्रंथ में स्पष्ट रूप से कहते हैं कि -

प्रकट कहेउ जहांन मान सद्गुरु शिर धारी,
कृष्णस्वामी जीन नाम कुवेर कहे ज्यों बलिहारी । 45/4

`ज्ञान गोदडी` ग्रंथ में भी उन्होंने गुरु के रूप में कृष्णस्वामी को ही माना है - कृष्ण स्वामी मम गुरु कीनेही, बसाई सारसापुरी सनेही । 4

वस्तुत: उनके सच्चे गुरु तो अंतर्स्थित परमात्मा ही थे.

`सत कैवल` संप्रदाय की प्रमुख गुरुगादी सारसा में स्थित सप्तम् कुबेराचार्य श्री अविचलदासजी महाराज ने प्रत्यक्ष मुलाकात के समय स्पष्ट रूप से समर्थन किया कि कृष्ण स्वामी करुणासागर के गुरु थे - " कृष्णस्वामी महाराज ने एमणे गुरु करेला. लौकिक दृष्टिए ज गुरु करेला. "

सारसा गुरुगादी के भूतपूर्व कोठारी श्री अमृतलाल दवे भी कृष्णस्वामी को ही करुणासागर का गुरु मानते हैं.

सागर महाराज [सन् 1883-1936] ने `संतोनी वाणी` नामक अपने ग्रंथ में अखा की प्रणालिका के संदर्भ में अपनी निजी डायरी में जीता मुनिनारायण के शिष्यों की सूची दी है. इस सूची में जीता मुनिनारायण के चार शिष्य संतराम, कुबेरदास (करुणासागर महाराज सारसा) जानकीदास खाखी ओड-उमरेठ और मोहनलाल ब्रह्मचारी का उल्लेख है. यह सूची डॉ. योगीन्द्र त्रिपाठी ने अपने ग्रंथ `अखो अने मध्यकालीन संत परंपरा` में दी है. [1] इस तरह श्री जानकीदास करुणासागर के गुरुबंधु के नाते परिचय में आये हुए होंगे और उन्होंने ओड के निवासी होने के कारण कृष्णस्वामी से करुणासागर की भेट करायी हो यह मानना सहेतुक है.

---

1. सागरनी डायरीमांथी उपलब्ध थती माहिती उपरथी अखानी साथे संकलित थयेला अखाजीनी प्रणालिकाना संतोनुं एक वृक्ष आ साथे पृष्ठ 3 अने 4 पर आप्युं छे , जे परथी गुजरातना भिन्न भिन्न स्थलोए आवेला संतोनी गुरु गादीओनो संबंध ब्रह्मनिष्ठ संत श्री अखाजी साथे केवा प्रकारनो हतो ए सहज स्पष्ट थशे. पृ. 2.

अक्षय वृक्ष

अखा की परंपरा में ही करुणासागर का स्थान निर्धारित करती हुई अक्षय वृक्ष की तालिका

अक्षय वृक्ष

अक्षा की परंपरा में ही करुणासागर का स्थान निर्धारित करती हुई अक्षय वृक्ष की तालिका

इससे दो बातें स्पष्ट होती हैं कि अखा की शिष्य प्रणाली के साथ करुणासागर का सीधा संबंध है और करुणासागर ने जिस प्रकार कृष्ण स्वामी को अपना गुरु माना, उसी प्रकार जीतामुनिनारायण को भी गुरु माना हो यह असंभव नहीं है.

श्री करुणासागर सं. 1934 वि. भाद्रपद कृष्ण 13 के दिन कैवल्यधामवासी हुए .

सामाजिक परिस्थितियाँ -

अब हम करुणासागर के व्यक्तित्व के विविध पहलुओं का सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों के संदर्भ में मूल्यांकन करेंगे. करुणासागर के समय में हरिजन, चमार, भंगी, खलासी, भीलादि लोगों को अस्पृश्य समझा जाता था. सवर्णों की नजरों में वे सब अस्पृश्य माने जाते थे. उन दिनों बाल लग्न, सती होना, दहेज प्रथा आदि रिवाज समाज में प्रचलित थे. भूत-प्रेत, पूजा-पाठ, कथा-वार्ता, तीर्थ-यात्रा, मंत्र-तंत्र, कंठी बँधाना, रोजा रखना आदि बाह्याडंबरों में समाज के लोग विश्वास रखते थे. समाज ऊँच-नीच, और जाति भेदभाववाली परंपरागत वर्णव्यवस्था में जकड़ा हुआ था. मुसलमानों के लगातार आक्रमणों के कारण समाज के चतुर्विध वर्गीकरण में मारे डर के संकुचितता आ गई थी, फलस्वरूप मूलवर्ण असंख्य जाति-उपजातियों में विभाजित हो गये थे.

समाज में ब्राह्मण वर्ग सर्वोपरि था. ब्राह्मण वर्ग लोगों को नित्य नियम के पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन, ग्रहनडतर , टीले- टपके, सिर मूंडन आदि बाह्याचारों में श्रद्धा दिलवाकर, अपनी आजीविकामूलक स्वार्थी और बाह्याचारी प्रवृत्तियों में निमग्न था. वैश्यवर्ग के पटेल और बनिये खेती एवं व्यापार में व्यस्त थे. जमीनदार श्रमिक और मजदूरों का शोषण करते थे. क्षत्रियों को अपने बल पर विश्वास था, परंतु अपनी वीरगाथा की प्रसिद्धि के लिए उन्हें भाट चारणों को आश्रय देना पड़ता था. समाज के वैश्य और शूद्र लोगों को अपने वश में रखकर क्षत्रियवर्ग अपनी सीमाओं को विस्तृत करने की प्रवृत्तियों में व्यस्त था. इससे करुणासागर जैसे संतों ने ऐसी जातियों को एक करनेका, उनको भयमुक्त करने का और उन्हें ऊँचा उठानेके भगीरथ कार्य को अविरत कठोर परिश्रम के द्वारा सम्पन्न किया, और समता एवं समन्वय की ओर समाज को अग्रसर किया.

धार्मिक परिस्थितियाँ -

मुसलमान शासकों के धर्म प्रचार के जनून से बचने के लिए हिंदुओं ने

अपने धर्म में विशेष रूप से लिपटे रहने की चेष्टा की जिसका ब्राह्मणों और आचार्यों ने नाजायज फायदा उठाकर उन्हें बाह्याचार के द्वारा अंधश्रद्धा में निमग्न कर दिया. इन परिस्थितियों में भी एक ओर इस्लाम के एकेश्वरवाद और सूफीवाद तो दूसरी ओर नरसिंह, मीरां, कबीर, अखा, ज्ञानेश्वर, तुकाराम, एकनाथ, नामदेव आदि संतों के अद्वैतवाद और प्रेमलक्षणा भक्ति ने समाज से बाह्याचारों को हटाने में महत्त्वपूर्ण सहायता ही नहीं दी वरन् समाज में धर्म के सामान्य सिद्धांतों के प्रतिपादन में भी अपना योगदान दिया जिसके फलस्वरूप अठारवीं शती के उत्तरार्ध में गुजरात में करुणासागर, सहजानंद स्वामी, प्रीतम, धीरो, निरांत, भाण साहेब, धीम साहेब, रवि साहेब, मोरार साहेब, त्रिकम, होथी, दासीजीवण आदि संतों एवं संत-कवियों ने समाज में धर्मभावना जागृत करके उसे दिशा प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया .

भारतीय समाज एवं धर्म एक दूसरे से क्षीर-शर्करा की तरह मिले हुए हैं. धर्म के विधि-निषेध के आधार पर सामाजिक आचारों की नींव पड़ती है, इसलिए जाति व्यवस्था, शादी व्याहादि संस्कार और तत्संबंधित भले-बुरे रिवाजों के पीछे धर्म का बल कार्य करता है. धर्म की अवधारणा युग की परिस्थितियों के साथ बदलती रही है, जिससे समाज में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं. इस्लाम के समय हिन्दू समाज और धर्म कुंठित हो गये थे, और उनमें स्वरक्षण की जाति सहज अंत:प्रेरणा से संकुचितता आ गयी थी. अंग्रेजों के आगमन के साथ शिक्षा के क्षेत्र में नवजागरण आने से सामाजिक मूल्यों में भी परिवर्तन आया. वेद उपनिषद के मूल सिद्धांतों का पुनरुद्धार हुआ. सामाजिक एवं धार्मिक सुधार की दिशा में ब्रह्मसमाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसायटी, रामकृष्ण मीशन, सत् कैवल संप्रदाय, स्वामी नारायण संप्रदाय, प्रणामी संप्रदाय, रामानंदी संप्रदाय आदि ने अपने अपने क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया.

करुणासागर की साहित्यिक कृतियों में उनका व्यक्तित्व झलकता है. कबीर और अखा जैसे ज्ञानानुभवी संतों की भाँति उन्होंने गुजरात के

तत्कालीन जीवन से अनेक दृष्टांत देकर ` सत कैवल ` सिद्धांत का प्रतिपादन किया है. उनके काव्य का प्रधान उद्देश्य ` सत् कैवल ` मत के प्रतिपादन के द्वारा जीव को अपना अंतिम लक्ष्य बताना है -

जुग परमोध करन हम आये, कुल करता निज आप पठाये,
जो कोहु माने कहया हमारा, तो पठवुं भवजलके पारा ।
सत शब्द की टेर सुनाई, अटल देशमे देहुं पोहोंचाइ ,
अटल देश अविगतका बंका, काल कलंक न व्यापत शंका ।
तेही धाममे लेइ बसावुं, कैवलके सनमुख दरसावुं,
हो ही कोइ जुगमे जन मेरा, जनम मरण टालुं भवफेरा ।

अगाधबोध 40 / 3,4,5

वे अन्य ज्ञानियों की तरह ` सत् कैवल ` मत का प्रतिपादन करके ही संतुष्ट नहीं हुए, वरन् उन्होंने अपने वचनों के द्वारा समाज सुधार के कार्य को भी अपनाया. वे तीन सौ से चार सौ संतों के साथ भ्रमण करने के लिए ` सगराम ` लेकर निकलते थे, और विभिन्न गाँवों एवं नगरों में धर्म का उपदेश देकर समाज-सुधार का कार्य करते थे. समाज कई प्रकार की रूढियों और मान्यताओं से ग्रस्त था. समाज अंध श्रद्धा में विश्वास रखता था. उन्होंने व्यावहारिक एवं पारंपरिक उदाहरणों के द्वारा समाज को नयी दिशा प्रदान की. उन्होंने कहा कि ` ओरी `, ` अछबडा ` यह दैवी प्रकोप न होकर तत्वों की विकृति मात्र है. वनस्पत्य भी तत्वों की विकृति ही है. वे जाति-वाद का भी विरोध करते थे. हिंदू-मुसलमानों के बाह्याचार की कटु आलो-चना उन्होंने की है. उन्होंने सगुण उपासना में व्याप्त दंभ और बाह्याडंबर का भी जोरदार विरोध किया है वे कहते हैं -

हिंदू मुसलमान दो अस्क हेवान, पति एक पैचान पैचान नांही,
यो कहे राम रहीमानकु वेज्जे, एक निरंजन एक सांही . ।
एक उपवास संध्याय गायंतरी, एक नवाज कलमान रोजा,
रांम रमेति रंमनंग चीन्या नहि, सांइ देदार ना सार खोजा.

एकु देवल देव पुजारी रहे, एक मसीत फकीर फकरा,
वादवेवाद ना दोय दरदीमुदा, न कदा कतथे होय नकरा ।

हंसतालेवा 2 / 1,2,3

इंट आशेपन लोप चुन करी, रख आकीन आधीन रहेता,
खोज कतेब सांइयां येसे क्या लीख्या, सचके जुठका जी क्यौं न कहेता ।
राम नहि धात पाषाणके काष्टका, इंट अल्का नहि घोर मरख्या,
केहं कुवेर अंधेर दोनु रची, सांइ साहेब ना कीने परख्या ।

हंसतालेवा 3/ 3,5.

एक दाढी रखे मुंड मुंडायके, एकु मुछ राखत चोटी,
एक मुवा पीछे द्वादशकु भखे, एक गाड़े पीछे खात त्रोटी ।

हंसतालेवा 6/4

इसप्रकार करुणासागर ने कबीर की भाँति अपने सांप्रदायिक व्यक्तित्व को ऊपर उठाकर हिंदू मुसलमान दोनों को खरी खरी सुनाई है. सिर्फ धर्म प्रचार ही उनके जीवन का लक्ष्य न था, पर वे धर्म प्रचार के माध्यम से समाज सुधार भी करना चाहते थे. इस प्रकार समाज- सुधार उनके व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण पहलू है .

आधुनिक अवकाश युग में इन्सान की बुद्धि पर तर्क और हृदय पर बुद्धि का प्राधान्य जब विद्यमान हो, प्राचीन अवतारों को जहाँ शंका की नजरों से देखा जाता हो, तब उनके चमत्कारों [परचों] का मूल्य नगण्य हो जाना स्वाभाविक है. कुछ भी हो संतों के चमत्कारों का प्रभाव जनजीवन पर पड़ता है, और उसे एक नयी दिशा प्रदान करता है.

` परचा ` शब्द का सामान्य अर्थ है परिचय परन्तु इस प्रसंग में इस शब्द का विशेष अर्थ यह है कि वे चमत्कारि प्रसंग जो समय समय पर करुणा - सागर ने अपने भक्तजनों के कल्याणार्थ उनके आग्रह पर बताये हैं. जैसा कि हम इन प्रसंगों में देखेंगे कि करुणासागर गुजरात के विभिन्न जिलों में भ्रमण करते थे, भक्तों के घर उनकी ` पधरामणी ` होती थी. उनके सदउपदेश और आध्यात्मिक शक्ति का बड़ा ही व्यापक और गहरा प्रभाव तत्कालीन समाज के

विभिन्न वर्गों पर पड़ा, जो विभिन्न प्रसंगों से स्वतः सिद्ध है. इन प्रसंगों में अधिक चमत्कारिता का समावेश अवश्य देखा जा सकता है, किंतु आज भी इन प्रसंगों की सत्यता की साक्षी के रूप में विभिन्न स्थानों पर विभिन्न प्रकार के प्रमाण हैं, जो विभिन्न प्रसंगों से ही स्पष्ट है.

करुणासागर का जीवन चमत्कारों से रिक्त नहीं है. उनका मानना है कि कुछ लोग संतों के ` परचों ` को देखकर अर्थ प्राप्त करने के हेतु ही धर्म पालन करते हैं. ऐसे लोगों से वे उठ जाने को कहते हैं -

आगल छे वाणी अटपटी, अरथीने थाशे चटपटी,
अनुभव उग्र अति वंकटो, अरथी हो ते उठी सटो । [1]

करुणासागर मानते हैं कि ` परचा ` से ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता, उससे पूर्ण पद की प्राप्ति नहीं होती -

परचा परची मननी होड, पूर्ण पदने तोये छोड़,
चतुर्भुज ते मनरूप धरे, भाग्य भाग्य सहुकोने करे. [2]

अब यह प्रश्न हमारे सामने आता है कि करुणासागर ने ` परचे ` क्यों दिखाये ? इसके दो कारण हैं. एक तो यह कि कुछ लोग संतों की वाणी पर तब विश्वास करते हैं, जब वे उन्हें कुछ चमत्कार बताये. दूसरा यह कि जो लोग आत्मसमर्पण करके भक्ति करते हैं उन्हें ईश्वर हमेशा मदद करते हैं, यह दिखाने के लिए उन्होंने ` परचे ` दिखाये हैं. वे किसी भी रूप में जनसमाज का कल्याण करना चाहते हैं, न कि प्रसिद्धि प्राप्त करना. इनके अनगिनत ` परचे ` हैं, जो विभिन्न ग्रंथों से स्पष्ट होता है.

एक बार करुणासागर संत मंडली के साथ चांगा पहुँचे. एक सेवक के घर भोजन करने के बाद वे उसके खेत पर गये. वहाँ उस सेवक ने उन्हें अनुनय किया कि ` कूप के लिए खेत में जगह बताइए `. उन्होंने जगह दिखायी और कहा

---

1. अमारबोध - 1 /5.
2. वही - 12 / 5.

कि इसका जल मनुष्य के पीने योग्य नहीं होगा, पर यदि खेती के लिए इसका उपयोग किया गया तो खेत में खाद डालने की जरूरत नहीं पड़ेगी. कूप को खोदने का श्रीगणेश हुआ. कुछ मुसलमान सज्जन वहाँ उपस्थित थे, उनसे भी उन्होंने मदद करने को कहा. उन्होंने कहा " हमें कहाँ इस कूप का पानी पीना है ? " करुणासागर ने बड़ी विनम्रता से कहा कि " आपको भी यह पानी पीना पड़ेगा. " कुछ दिनों के बाद उस कूप का जल मीठा हो गया. सब लोग इसे परमगुरु का चरणामृत समझकर पीने लगे. इस प्रकार हिंदू और मुसलमानों को एक करने में उन्होंने सहायता पहुँचायी.

गुजरात में भावसार केमिकल्स सूरत जिले के व्यारा नामक नगर में स्थित एक कारखाना है. इसके स्थापक थे भगवानदास भावसार. वे निःसंतान थे, वे परमगुरु के परम भक्त थे. एक बार सूरत जिले के प्रचार दौरे के दौरान करुणासागर भगवानदास के घर पहुँचे. भगवानदास ने उनका भव्य स्वागत किया. परमगुरु ने आशीर्वाद दिया और पंचधातु की एक मूर्ति सेवा के लिए दी. भगवानदास ने कहा कि मेरे बाद तो यह मूर्ति अपूज रहेगी, इसलिए आप इसकी पूजा की भी व्यवस्था करे. गुरु ने आशीर्वाद दिया, और उन्हें पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ, जिसे आज व्यारा की जनता मगनभाई के नाम से पहचानती है. घर में ही मंदिर बनाया गया, और मूर्ति की पूजा होने लगी.

एक दिन मगनभाई को विचार आया कि यह मंदिर घर के बीच में पड़ता है, तो जरा इसे कोने में बनवा दे, और मंदिर तुड़वाना शुरू हुआ, एक ईंट निकालने पर एक फणिधर प्रकट हुआ, मानो यह कह रहा हो कि इसे मत तोड़ो. मगनभाई ने उसी मंदिर को और सुशोभित किया, और वे बड़ी लगन से सेवा पूजा करने लगे.

एक बार करुणासागर धर्म उपदेश के लिए बामरोली नामक गाँव में गये. वहाँ पर एक आदमी भूतपीड़ित था, जिसका उपचार भूवा-जागरिया और साधुओं के द्वारा कराया गया था, पर वह अधिक उत्पीड़ित हो रहा था. ऐसी परिस्थिति से उस गाँव और आजुबाजु के गाँवों की जनता भी निराश

हो गयी. गाँव के लोगों ने जब करुणासागर को सभी घटनाओं से अवगत कराया, तो उन्होंने उस आदमी को चरणामृत पिलाया, और वह आदमी चंगा हो गया, तब से बामरोली और ग्यारह पटाके लोग करुणासागर की स्तुति करने लगे.

भड़ोच जिले के राजपीपला तहसिल में करुणासागर का जब आगमन हुआ, तब कुछ भक्तजनों ने गाँव के स्थायी निवास के लिए नया गाँव बसाने के लिए उनसे प्रार्थना की. करुणासागर ने कहा कि मैं इस घोड़ी को छोड़ता हूँ, वह जहाँ जाकर रुक जाय, उसी जगह पर नया गाँव बसाइए. घोड़ी नीची जमीन पर जाकर रुक गयी. गाँव लोगों ने कहा कि यहाँ तो पानी भर जाने की संभावना है,तो आप कोई दूसरी जगह बताइए. करुणासागर ने उसी जमीन पर गाँव बसाने को कहा. वह गाँव आज ` नया राजुवाडिया ` नाम से पुकारा जाता है, और वहाँ के लोग आज भी परमगुरु की पूजा करते हैं.

चांगा नामक गाँव में करुणासागर का अनन्य भक्त रहता था. वह किसान था. उसने अपने खेत में गन्ना बोया था, जो रोगग्रस्त हो गया था. एक दिन करुणासागर वहाँ गये, किसान तो गन्ने को कटवाकर फेंक देने की तैयारी में था. करुणासागर उसके खेत में पहुँचे और एक पेड़ पर चढ़कर अपनी छड़ी को ऊँचा करते हुए कहा इसे मत काटो यह इतना [छड़ी जितना] ऊँचा होगा, और सचमुच यही हुआ और किसान को अच्छा मुनाफा भी हुआ.

एक बार कायमपंथ के साधुओं ने ` बाजरी ` साफ करके आँगन में रखी और वे भोजन करने गये. इतने में दो चोर आये और दो बड़ी गठरियाँ ` बाजरी ` भर ली. पहले चोर को दूसरे चोर ने गठरी सिर पर चढायी, पर अब उसे कौन चढाएगा ? करुणासागर को इस बात का पता चला, और उन्होंने आकर गठरी चोर के सिर पर चढा दी और कहा कि जल्दी चले जाओ नहीं तो अभी साधु लोग आकर तुम दोनों को मारेंगे. चोरों को जब यह पता चला तब वे खूब पछताए और अन्ततः गुरु शरण में गये.

करुणासागर जब बाल्यावस्था में थे तब उनके पालक माता-पिता ने उन्हें खेत की रक्षा हेतु खेत में भेजा. वे तो वहाँ बैठकर कीर्तन किया करते, और चिड़ियाँ खेत को चुगती रहतीं, जैसे ` राम की चिड़ियाँ, राम का खेत, खालो चिड़ियाँ भर भर पेट . ` किसी ने उनके माता-पिता को यह बात बता दी तो माता-पिता ने उनको खूब डाँटा. तब उन्होंने पूछा " हर साल कितना अनाज उत्पन्न होता था ? " जवाब मिला एक ` खांडी ` उन्होंने कहा इस साल पाँचगुना अनाज होगा, और ऐसा ही हुआ, तब माता-पिता को उनकी दिव्यविभूति का परिचय हुआ.

सारसा नगर में अचरतबा नामक एक ब्राह्मण नारी रहती थी. वह करुणासागर की अनन्य भक्त थी. उनका नियम था कि गुरु के दर्शन बिना अन्न जल न लेना. इनके रिश्तेदारों ने इस प्रवृत्ति का विरोध किया.उन्होंने एक दिन घर के सभी दरवाजे बंध कर दिये और वे लाठियाँ लेकर बाहर खड़े रहे. चमत्कार यह हुआ कि अचरतबा नित्यनियमानुसार गुरु दर्शन के लिए गई थी. इस बात का पता जब ब्राह्मणों को चला तब उन्होंने अपने कुकृत्य के लिए क्षमा माँगी. [1]

सारसा नगर में द्वारकादास जेसंगभाई पटेल नामक एक सज्जन रहते थे. वे करुणासागर के अनन्य भक्त थे. प्रथम ब्याह से उन्हें एक पुत्र रत्न प्राप्त हुआ था, जो कुछ वर्षों के बाद चल बसा. वे निःसंतान हो गये. एक दिन किसी स्वजन ने उन्हें ताना कसा कि तुम तो निःसंतान हो, तब उन्हें बहुत ही दुःख हुआ. करुणासागर के पास आकर उन्होंने अपनी करुण कहानी सुनायी. उन्होंने कहा कि यदि आप शादी करते हैं, तो आपको दो संतानों का योग है, जो मेरे अनुजों को चादर ओढाने का काम करेंगे. दूसरी शादी करना उन्हें योग्य न लगा. करुणासागर ने कहा कि सात ही दिनों में तुम्हारी शादी हो जाएगी, और हुआ भी ऐसा ही. उनकी दूसरी पत्नी करुणासागर की अनन्य भक्त थी. वह उनके दर्शन के बिना अन्न जल ग्रहण करती न थी. उन्होंने उसे

---

1. भगवान करुणासागरनो जीवन प्रभाव- हरिभाई उमरीगर, पृ. 4

दो फूल दिये और उन्हें दो संतान हुए - जगुभाई और झीणाभाई. करुणासागर ने द्वारकादास की द्वितीय पत्नी की सेवा से प्रभावित होकर उसे एक रूमाल भेट दिया, जिससे अनेक संकटों में उनके कुटुंब की रक्षा हुई. यह रूमाल उन्होंने झीणाभाई की पत्नी समजुबा को दिया, जो आज उनके कुटुंब में सुरक्षित है, और आज भी उनके वंशज सत् कैवल संप्रदाय के गादीपति को चादर ओढाने का काम करते हैं.

खेड़ा जिला के अजरपुरा गाँव में करुणासागर एक दिन धर्म प्रचारार्थ गये हुए थे. गाँव के लोगों ने उनका आदर सत्कार किया. पाँच भक्तों ने उन्हें एक ही दिन भोजन के लिए निमंत्रित किया. उन्होंने एक ही दिन एक ही समय पाँच अलग अलग स्वरूप धारण करके पाँचों भक्तों के घर भोजन किया. रात को कथा श्रवण के समय पांचों भक्तों ने एक दूसरे से कहा कि आज तो करुणासागर ने मेरे घर अमुक समय भोजन किया, तो भक्तों को लगा कि उन्होंने पाँच स्वरूप धारण करके ही पाँचों भक्तों की मनोकामना पूर्ण की.[1]

एक दिन करुणासागर सारसा में धर्मोपदेश कर रहे थे. भक्त लोग एकचित्त होकर उनका उपदेश सुन रहे थे. इतने में कथास्त्रोत यकायक रुक गया, और वे ध्यानस्थ हो गये. चंद मिनटों के बाद उन्होंने फिर से कथास्त्रोत को प्रवाहित किया. कथा पूर्ण होने के बाद भक्तजनों ने जब यह पूछा कि आप ध्यानावस्था में क्यों अवस्थित हुए, तब उन्होंने कहा कि सूरत जिले के उमरा गाँव के भक्तजन समुद्र में मुसाफिरी करते थे, और उनका जहाज डूबने की तैयारी में था. उन्होंने मौत को भेटने के पहले मुझे याद किया. इसलिए मैं उनके रक्षार्थ वहाँ गया था, ' देखिए मेरे हाथ भीगे हैं. ' दो तीन दिनों में वे लोग यहाँ आयेंगे, और मंदिर पर धजा चढाएंगे. दो दिनों के बाद सचमुच वे लोग आये और उन्होंने धजा चढ़ाई. आज भी उमरा के खलासी अपनी नौका में करुणासागर का फोटो रखते हैं. उमरा में करुणासागर का भव्य मंदिर आज

---

1. तार पीछे विख्यात पंचजन बुतो दीनो
   सकल ठोर एक बेर, आप जइ भोजन कीनो.
   करुणासागर कृत हंसतालेवा मंगलाचरण- 17.

भी इस प्रसंग की गवाही देता हुआ तीर्थ स्थान बना हुआ है. [1]

एक ब्राह्मण का पुत्र चल बसा. वह करुणासागर के पास जाकर रुदन करते हुए बिनती करने लगा कि " आप तो दिव्य पुरुष हैं इसलिए मेरे पुत्र को सजीवन करने की कृपा करें. यदि वह सजीवन होता है, तो मैं आपके चरणों में धर दूँ. " करुणासागर ने मृत पुत्र के प्रति कृपा दृष्टि की और वह सजीवन हो गया. वचन के अनुसार ब्राह्मण ने अपने पुत्र को समर्पित कर दिया. [2]

कहा जाता है कि एक बारोट की मृत पुत्री को भी उन्होंने अपनी करुणा दृष्टि से सजीवन किया था, और एक ब्राह्मण की अपाहिज बेटी को भी स्वस्थ किया था. उन्होंने एक गूँगे को वाणी प्रदान की थी. एक गाँव में एक जमीनदार और एक बनिये की पत्नी मर गयी थीं, उन दोनों को भी उन्होंने सजीवन किया था. [3]

आखड़ोल गाँव में कालिदास नामक भक्त रहते थे. उनके घर में भूत था जो किसी तरह भी हटता न था. अंत में वे करुणासागर की शरण में गये. उन्होंने उसे अमर मंत्र का जाप सुनाया और भूत उसी क्षण घर छोड़कर भाग गया.

---

1. भगवान करुणासागरनो जीवन प्रभाव, पृ. 5.
2. विप्र पुत्र मरकत जीवे म्हे देवु तमकु,
   लीनो तुरत उठाय फेराये रवि सुत जमकु ।
   हंसतालेवा, मंगलाचरण, 20.
3. चंडी पुत्र एक भाट तायकी पुत्री जीवाइ
   विप्र सुता एक पंग अंगकी सुध्य चलाइ
   शाह त्रिया जमीदार नार दो मृतक उगारी
   मूगो किया वाचाल विशाल वाणी भइ प्यारी ।
   हंसतालेवा, मंगलाचरण, 18,19.

एक बार करुणासागर रूपियापुर गाँव गये थे, सभी भक्तजन उनकी अमृतवाणी का पान कर रहे थे. पास में ही सुरकुवा नामक एक छोटासा गाँव है, वहाँ नारणदासजी महाराज रहते थे और उनकी इच्छा करुणासागर की प्रतिमा स्थापित करने की थी, जिसके लिए उन्होंने एक मंदिर भी बनवाया था . वे रूपियापुर गये और उन्होंने करुणासागर को मूर्तिस्थापना के लिए सुरकुवा आनेकी प्रार्थना की. उन्होंने आमंत्रण स्वीकार किया, परन्तु गाँव लोगों ने उन्हें सुरकुवा नहीं जाने दिया. कभी कभी भक्तों पर भी हठ सवार हो जाती है. मूर्ति प्रतिष्ठा के दिन करुणासागर ` सगराम ` लेकर सुरकुवा जाने को उद्यत हुए तब भक्तजन रास्ते पर सो गये और विनती की कि वे रूम में पलंग पर सोकर आराम करे. भक्तजनों की बात उन्होंने मान ली. भक्तजन द्वार बंध करके बाहर बैठे रहे. उधर मूर्ति प्रतिष्ठा के समय करुणा-सागर सुरकुवा में उपस्थित हो गये. वहाँ के भक्तों ने उन्हें गुलाल से रंग दिया. वे अपना काम पूर्ण करके रूपियापुर पहुँचे. भक्तजनों ने बंध द्वार खोला तो करुणासागर के शरीर पर गुलाल था और वे ध्यानावस्था में स्थित थे. लोगों ने परमगुरु की लीला देखकर उनकी माफी माँगी.

इसी गाँव में एक और भक्त रहते थे. वे परमगुरु के अनन्य भक्त थे. परमगुरु के वचनानुसार वे अपना जीवन-यापन करते थे. एक दिन वे बहुत बीमार हुए. किसी भक्त ने सारसा जाकर परमगुरु को यह खबर पहुँचाई. परम-गुरु ने उस व्यक्ति को ग्यारह गोलियाँ दीं, उस व्यक्ति ने आकर बीमार भक्त को ये गोलियाँ दीं. भक्त परमगुरु का संकेत समझ गये, ग्यारह दिनों के बाद स्वजनों को बुलाकर हँसते हुए वे परमधाम पहुँचे.

एक छोटासा गाँव था उसमें अवलबाई नामक एक वृद्धा रहती थी. वह भक्त थी. उसने बारह साल तक तीर्थाटन, जप, तप, व्रतादि किया फिर भी उसे परमात्मा के दर्शन नहीं हुए. भगवान के दर्शन के लिए लाला-यित उसके मन ने अन्न का त्याग किया. भगवान भोजन कराये तब ही भोजन करने का उसने संकल्प किया. तीन वर्ष और बीत चुके परंतु भगवान के

दर्शन उसे नहीं हो पाये. अब तो उसने और कठोर नियम लिया. उसने द्वार को भीतर से बंध किया और अन्न-जल का त्याग करके वह ध्यानावस्था में बैठ गयी. दस दिन में परमगुरु ने दर्शन देकर अपने हाथों से उसे भोजन कराया, और आशीर्वाद देकर अदृश्य हो गये.

एक बार करुणासागर कैवल ज्ञान प्रचारार्थ नावरा नामक गाँव में पहुँचे, गाँव लोगों ने उनका स्वागत किया, और वहाँ प्रतिदिन कीर्तन स्तुति आदि होने लगा. भक्तजन प्रतिदिन उनकी आरती उतारते थे. एक दिन एक ईर्षालु भक्त ने सबसे कहा कि ये तो मनुष्य है, उसकी आरती नहीं उतारनी चाहिए. भक्तजन शांत बैठे रहे. आरती के समय पर परमगुरु पधारे और आरती अपने आप प्रज्वलित हुई और अंतरिक्ष में घूमने लगी. भक्तजनों ने गदगद होकर उनकी माँफी माँगी और उस अभिमानी आदमी ने परमगुरु की शरणागति का स्वीकार किया.

एक बार करुणासागर धर्मोपदेश करते करते बड़ौदा जिले के वरणामा नामक गाँव में आ पहुँचे. भक्तजनों ने उनका स्वागत किया. वे कथा-वार्ता के द्वारा ग्रामजनों को उपदेश देते थे. उन भक्तों में शामला नामक एक गरीब बाई भी थी. सभी भक्तजन अपने घर करुणासागर को आमंत्रित करके अच्छा भोजन खिलाते थे. शामला के पास प्रेम के सिवा और कुछ भी नहीं था. एक दिन शामला ने भोजन के लिए करुणासागर को आमंत्रित तो किया, पर घर में ` बाजरी ` के सिवा कुछ भी न था. परमगुरु बाई की पीड़ा समझ गये और बोले " मीठा भोजन करते करते खूब ऊब गये हैं, आज तो सादा भोजन करेंगे. " भोजन के बाद वे घर में इधर उधर देखने लगे. एक कोठी के पास जाकर उन्होंने पूछा " इसमें क्या है ? " बाई ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया कि इसमें ` बाजरी ` है. उन्होंने कहा कि कभी भी इसका ऊपर का ढक्कन मत खोलना, जरूरत पड़ने पर निम्न छेद से ` बाजरी ` प्राप्त कर लेना. इस प्रकार कुछ महीने बीत गये. छोटे पुत्र की बहू को शंका हुई कि बाजरी कम हुई होगी. उसने पाँच मन बाजरी निकाली और कोठी में देखा तो कोठी भरी हुई थी.

उसने अपनी सास से यह बात कही . सास ने उसे परमगुरु की कृपा का ही फल माना .

सारसा के पास खेरडा नामक एक छोटासा गाँव है. एक दिन करुणा-सागर धर्मउपदेश के संदर्भ में वहाँ पहुँचे. गाँव के लोगों ने उनका स्वागत किया. गाँव लोगों में एक ईर्षालु आदमी भी था. उसके मन की बात करुणासागर जान गये और नीम के पेड़ के नीचे जाकर उस नीम को आशीर्वाद दिया. नीम मीठा हो गया. आज वह नीम खेरडा गाँव में विद्यमान है.

सारसा में करुणासागर के साथ असंख्य शिष्य रहते थे. उनमें से नारण-दास और रघुराम से उन्हें अधिक प्रेम था. रघुराम तो हमेशा समाधिस्थ रहते थे. कुछ ईर्षालु शिष्यों में से एक ने परम गुरु से फरियाद की कि " रघुराम तो कुछ काम नहीं करता, और सारे दिन समाधि में बैठा रहता है. उसकी आँखों में विकार है. " उसकी बात सुनकर परमगुरु ने उससे कहा कि ` ऐसा हो तो उसकी आँखों में आकड़े का दूध डालकर आँखों पर पट्टी बाँध दीजिए, जिससे वह अंधा हो जाय. गुरु-आज्ञा का पालन किया गया. जब रघुराम जाग्रत हुए तब गुरु कृपा से उनकी आँखें और तेजस्वी बन गईं. इस तेज को देखकर वह ईर्षालु शिष्य स्वयं अंध हो गया, और उसने अपने कुकर्म की माँफी माँगी. रघुराम तपस्वी थे. तापी नदी के किनारे पर उन्होंने तप किया और सूरत जिले के उमरा गाँव में परमगुरु का मंदिर भी बनवाया. आज भी उमरा गाँव में उनकी स्मृति में उनके कमंडल, माला, चिपियादि तप की महिमा समझाते हुए विद्यमान हैं.

करुणासागर धर्मोपदेशार्थ बड़ौदा जिले के फाजलपुर गाँव में गये हुए थे. उनके साथ संत-शिष्य भी थे. मेनपुरा गाँव के लोग भी उनके दर्शन करने वहाँ आये हुए थे. एक भक्तजन ने परमगुरु से अपने खेत को पावन करने को कहा. वे वहाँ गये. अनार के पेड़ के नीचे खटिया पर उनको बिठाया गया. गन्ने से सबका स्वागत करना था, पर भक्तसमूह बड़ा था, और गन्ना कम था, इसलिए यजमान भक्त की चिंता बढ़ गई. परमगुरु भक्त की उलझन को समझ गये. उन्होंने चार भक्तों को बुलाया, और संकेत से एक कोने से गन्ने काटने को कहा. दो

भक्त गन्ना काटने लगे और दो भक्त गन्ना लाने में लग गये. लगभग पाँच सौ भक्तों ने रसपान किया फिर भी वह कोना गन्नों से भरा हुआ था. यह घटना देखकर भक्तजन आश्चर्यचकित हो गये. परमगुरु ने जाते हुए उस अनार के वृक्ष को संबोधित करके कहा - ` अनार, तू तो अमर हो गया. ` उस भक्त के एक स्वजन का रोग के कारण देहांत हुआ. किसी ने उसको समझाया कि तुम्हारे गुरु ने अनार के पेड़ को अमर बनाया है, इसलिए तुम को अनार के अस्तित्व तक कुछ न कुछ नुकशान होता रहेगा. भक्त ने उसकी बात की ओर ध्यान न दिया. चार मास के बाद उस भक्त के घर दूसरे व्यक्ति का अवसान हुआ, तो उस आदमी ने उस भक्त को अनार के वृक्ष को उखाड़कर फेंक देने को कहा. जब दो दो स्वजनों की मृत्यु हुई तो उस भक्त को भी संदेह हुआ और उसने अनार को उखाड़ फेंका. वर्षाऋतु में अनार फिर से पल्लवित हुआ. उस भक्त ने उसे जड़मूल से उखाड़ दिया और उस जगह को सुलगा दिया, जिससे उसके बचे मूल भी भस्म हो जाय. वर्षाऋतु में उसी जगह पर अनार पुन: पल्लवित हुआ. कुछ सज्जनों ने भक्त से कहा कि ` अब आप इसे वैसे ही रहने दीजिए, यह तो परमगुरु के आशीर्वाद से अमर हो गया है. आज डेढसौ साल के बाद भी वह अनार आज भी मौजूद है. भक्तजन यहाँ आकर मनौतियाँ करते हैं. वहाँ करुणा-सागर का मंदिर भी बना हुआ है.

एक बार करुणासागर धर्मोपदेशार्थ बड़ौदा आये. उस समय वे भक्त समूह के साथ डंका निशान छड़ी दफ्तर के साथ ` सयराम ` में घूमते थे, उस समय ऐसा लगता था, जैसे राजा की सवारी जा रही हो. इस बात का पता जब गायकवाड नरेश को चला तब उन्होंने उनको अपने महल में बुलाया और नजरकैद में रखा. गायकवाड नरेश का मानना था कि मेरी इजाजत के बिना कोई भी इस प्रकार राजमार्ग पर घूम नहीं सकता. नरेश ने परमगुरु से कहा कि " आप महान पुरुष हैं, उसकी प्रतीति मुझे हो जाय, तो मैं आपको डंका निशान के साथ घूमने दूँगा. " परमगुरु उस समय तो कुछ नहीं बोले. संध्या समय हुआ, उस समय राजा के दिवानखाने में वे स्वयं प्रकट हुए और स्वयं उनकी आरती

उतरने लगी. गायकवाड नरेश तो यह देखकर दिग्मूढ हो गये, उन्होंने उनकी क्षमा चाही और उन्हें दो बंदूक भेट देकर दो प्रहरियों के साथ अपने राज्य में कहीं भी घूमने की इजाजत दी.

इस प्रकार विभिन्न परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में हमने करुणासागर के व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त किया है. ये मूलतः समाज सुधारक कहे जा सकते हैं. उन्होंने आत्मसाक्षात्कार करके मशुमती भूमिका प्राप्त की थी. अतः इनकी वाणी में अनुभूति की तीव्रता, गहराई और सचाई है. इसी कारण ये कहीं तो तीव्र चोट करते हैं तो कहीं मर्म समझाकर प्रेम वर्षा द्वारा मार्गदर्शन भी करते हैं. इनके व्यक्तित्व के अक्खडपन, निरालेपन और अन्य विशेषताओं को समझने के लिए हमें उस भूमिका पर जाना होगा, अन्यथा हम इनके व्यक्तित्व और जीवनी के संबंध में न्याय नहीं कर पायेंगे.

परवर्ती पृष्ठों पर हम इस दिव्य पुरुष की रचनाओं का परिचय प्राप्त करेंगे.